डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 मई 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - नौवां | अंक-पहला | मई-2011 | मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 9950 55 66 71

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 9928 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा
ज्योति सरदाना
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक - मुद्रक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा के
आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे
श्री गंगानगर से मुदित
व 1027 अग्रसेन नगर,
श्री गंगानगर- 335001
(राजस्थान) से प्रकाशित

सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर
जिला-श्री गंगानगर (राज.)

5 **हमारे प्यारे सतगुरु**
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(मुम्बई)

19 **कपटस्नेही**
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

27 **दया का सागर**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के
मुखारविन्द से
(आस्ट्रेलिया)

34 **धन्य अजायब**
दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 110 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

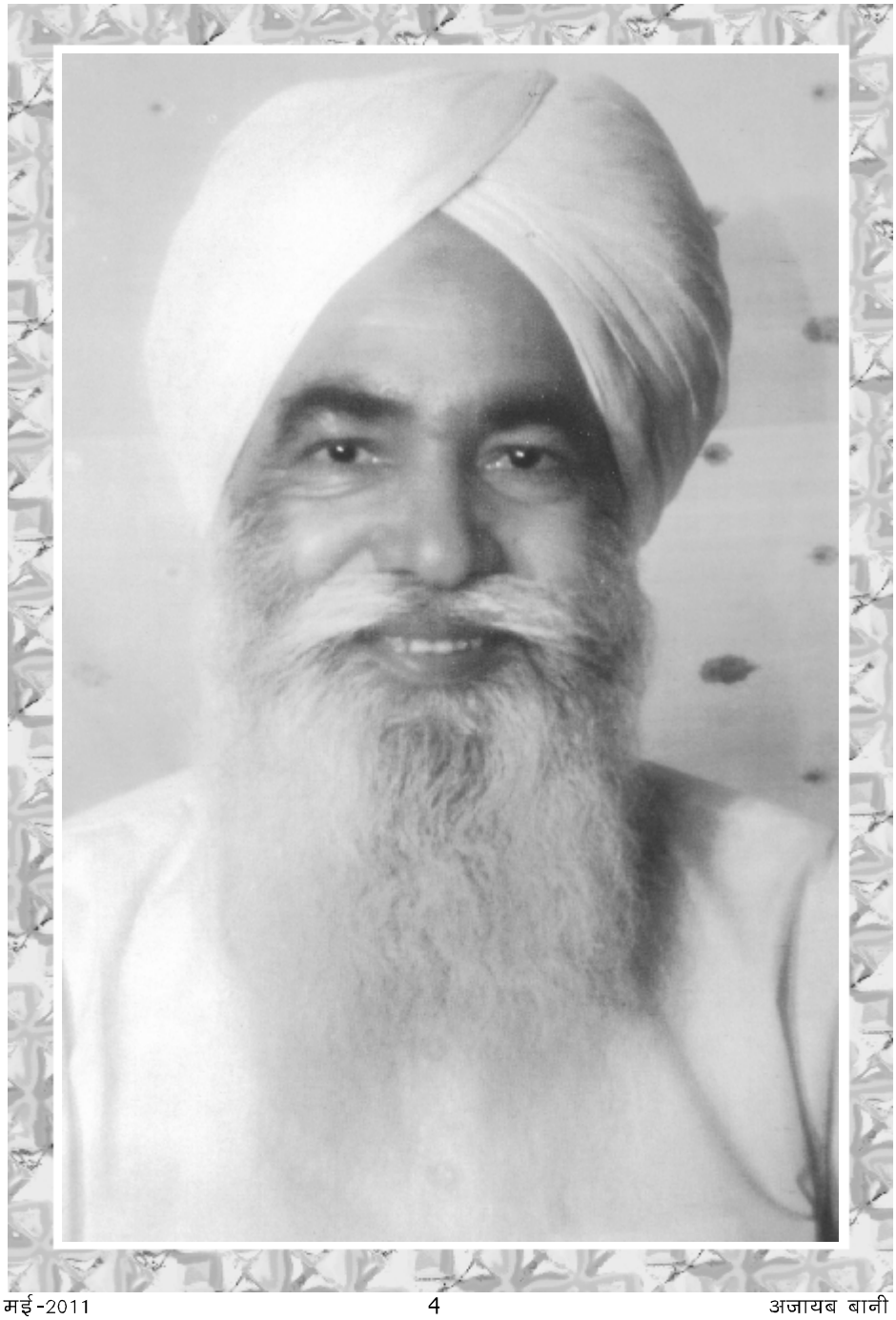

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हमारे प्यारे सतगुरु

कबीर साहब की बानी

मुम्बई

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा, हमने न कोई और देखा, (2)
वे तो महान हैं मेरे सतगुरु, (2) उन सा महान न और देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

1. वे हैं दोनों जहाँ के मालिक, दुनियां के दिल में बसने वाले,
हर घट के ज्ञाता हैं वे ज्ञानी, दिलों की बातें जानने वाले, (2)
शब्द स्वरूप है रूप उनका, (2) रूप जो हमने आंखों से देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

2. देखे तो देखने वाला देखे, देखे तो देखता ही रह जाऐ,
प्यारी मूरत प्यारी सूरत, देखने वाला उनका हो जाऐ, (2)
मनमोहक मन को भाने वाला, (2) मनभावन हम सबने देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

3. देखा तो शायद हर नज़र ने देखा, अपने–अपने ख्याल से,
जिसने भी उनको प्यार से देखा, निकला वो इस मझधार से, (2)
वे तो हैं इक महान नाविक, (2) भरकर नाव ले जाते देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

4. वह नाविक गुरु कृपाल है प्यारे, सावन प्यारे का प्यारा,
कृपा का सागर कृपाल है प्यारे, 'अजायब' को जान से भी प्यारा, (2)
वे तो अति सुंदर सलोने, (2) उनका हुआ जिसने देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, दया की, भक्ति का दान दिया और उस घर के बारे में बताया जहाँ से यह आत्मा पता नहीं कितने ही जन्मों से भूली हुई

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

थी। आत्मा को याद दिलाया कि प्यारी बच्ची! तू जहाँ बैठी है यह तेरा घर नहीं, तेरा घर सच्चखंड है। हम परमात्मा का धन्यवाद लफ्ज़ों से नहीं कर सकते; अंदर जाकर गुरु की शिक्षा पर अमल करके ही परमात्मा का सच्चा धन्यवाद कर सकते हैं।

आप किसी भी पूर्ण सन्त कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी और दसों गुरुओं की लेखनियाँ पढ़कर देखें! हर सन्त ने यही इकबाल किया है कि हमने अपने गुरु जैसा कोई और नहीं देखा। हम कहेंगे कि वह हमारे जैसा ही इंसान है और हमारी तरह खाता–पीता है। इसमें कोई शक नहीं कि वह इंसानों वाली क्रियाएं करता है क्योंकि वह हमारे जैसा ही बनकर आया है।

मैंने कल सतसंग में बताया था कि हम सबका दिल तो करता है कि हम इस नाशवान दुनियां का ख्याल छोड़कर परमपिता परमात्मा के साथ प्यार करें लेकिन हमनें इन आँखों से परमात्मा को नहीं देखा न ही कोई इन आँखों से परमात्मा को देख सकता है क्योंकि वह गुप्त है। परमात्मा हमें इस संसार में भेजकर हमारी इस लाचारी को अच्छी तरह जानता है इसलिए वह इंसानों में इंसान बनकर आता है अगर परमात्मा देवी–देवता बनकर आता तो हम उसे देख नहीं सकते थे अगर गाय–भैंस या पक्षी के चोले में आता तो हम उसकी बोलचाल नहीं समझ सकते थे।

परमात्मा इंसान बनकर आता है वह क्रियाएं तो इंसानों वाली करता है लेकिन इसमें बहुत अंतर होता है। एक पढ़ा–लिखा है दूसरा अनपढ़ है उनकी लियाकत में बहुत फर्क होता है। सन्त संसार में आकर बहुत छोटा सा जीवन व्यतीत करते हैं बेशक सन्त अमीर घर में पैदा हों या गरीब घर में पैदा हों उन पर गरीबी–अमीरी का कोई असर नहीं पड़ता। वे गरीबी में अपना धंधा करके रोजी–रोटी कमाते हैं जबकि राजा–महाराजा उनके सेवक होते हैं जो उन्हें अच्छे महलों में भी रख सकते हैं लेकिन वे अपनी जिंदगी अपने ढ़ग से ही जीते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगर वे अमीर परिवार में पैदा हों तो उनके ऊपर उस अमीरी का कोई असर नहीं होता। परमात्मा ने उन्हें जिस मकसद के लिए भेजा होता है उस मकसद का उन्हें शुरू से ही ज्ञान होता है लेकिन कुछ समय के लिए एक छोटा सा पर्दा होता है; परमात्मा यह भी जानता है कि उस पर्दे को किस समय उतारना है। जब ऐसी आत्मा किसी पूर्ण महात्मा की शरण में आती है तो आँखे चार होते ही पहचान लेती है। जिस तरह हम जंगल में भूले–भटके हों! प्यासे हों! अचानक ही हमें अपना कोई सज्जन मिल जाए तो हमें कितनी खुशी होती है, क्या हम अपने सज्जन को नहीं पहचानेंगे?

लया पहचान ऐ यार चरोका घुट गले नाल लाया।

जिस तरह माता बच्चे से प्यार करती है बच्चे के अंदर ममता जाग जाती है, माता के अंदर पहले से ही ममता जागी होती है। माता जो बोली बोलती है बच्चा वही बोलता है। जब बच्चा थोड़ा सा टूटा–फूटा शब्द बोलता है तो माता घरवालों को बताती है कि आज बच्चे ने यह लफ्ज़ बोला है।

जिस तरह कोई प्रेमी विदेश से आकर हमारे पास रहने लग जाए। वह अपने देश की अच्छी बातें बताए कि वहाँ ये सहूलियते हैं बेशक हमने वह मुल्क तो नहीं देखा होता लेकिन हम उसकी बातों पर ऐतबार करके उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी तरह परमात्मा इंसानी लेवल पर आता है और हमारे साथ हमारे जैसा ही बनकर रहता है। वह हमारे साथ हमेशा उस मुल्क की बातें करता है। वह बताता है कि यह दुखों की दुनियां है। जरा निगाह मारकर देखें! क्या दुख बयान किए जा सकते हैं? यहाँ किसी को कर्जा लेने का तो किसी को कर्जा देने का दुख है। किसी के घर बेटा नहीं वह तड़फता फिरता है। किसी का जवान बेटा गुजर गया है वह बेचारा तड़फता है। आप उससे पूछकर देखें क्या उसे रात को नींद आती है? किसी की पत्नी साथ छोड़ देती है, किसी का पति साथ छोड़ देता है और कोई बीमारी से दुखी है। यहाँ दुख ही दुख हैं, मुसीबतें ही मुसीबतें हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वह मालिक का प्यारा हमारे बीच आकर रहता है और हमें बताता है कि प्यारेयो! आप जहाँ के रहने वाले थे वह शान्ति का देश है। वहाँ दिन–रात नहीं, सूरज–चन्द्रमा नहीं, वेद–शास्त्रों के झगड़े नहीं। ऐसा नहीं कि वहाँ आज राजा यह है कल कोई और है। जिनके भाग्य अच्छे होते हैं वे उसकी बात पर ऐतबार कर लेते हैं और उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह उन्हें उनके घर पहुँचाकर पूछता है, ''देख भाई! मैं तुझसे जो बातें कहता था वह सच हैं या नहीं?'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

सतगुरु नूं सबको देखदा जित्ता है संसार।
डिट्ठयां मुक्त ना होवी जिच्चर शब्द न धरे प्यार।

आप किसी भी सन्त की बानी पढ़कर देखें! सबने अपने गुरु को सुंदर कहा है। जैसे इस शब्द में गुरमेल सिंह ने बोला है:

देखा तो शायद हर नज़र ने देखा अपने अपने ख्याल से।

परमात्मा कृपाल को बहुत लोगों ने चलते–फिरते, बातें करते हुए, देखा है लेकिन सबका अपना–अपना ख्याल था। जिसे प्यार होगा क्या वह अपने प्यारे को नाराज़ करेगा? हम किसी दोस्त के आने पर अपने घर में कोई बुरा काम नहीं करते कि यह हमारे बारे में क्या कहेगा? अगर आपका गुरु के साथ सच्चा प्यार है तो क्या आप विषय–विकारों, शराबों–कबाबों की गंदगी में फँसेंगे? क्या आप उसका कहना मानकर भजन नहीं करेंगे?

जब हम गुरु के कहे मुताबिक सिमरन के जरिये नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आते हैं सूरज चन्द्रमा सितारे पार करके गुरु स्वरूप तक पहुँचते हैं तो जो प्रेमी उस मन–मोहनी सूरत को अंदर प्रकट करता है उसका नमूना इस दुनियां में नहीं है। परमात्मा ने बचपन से ही सन्तों को बहुत रूप दिया होता है। बचपन से ही दुनियां उन्हें देखकर आकर्षित होती रहती है। वे जब बुजुर्ग हो जाते हैं फिर भी उनमें एक खास आर्कषण होता हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं :

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सज्जन मुख अनूप अट्ठे पहर निहालसां।

मेरे गुरु का मुख इतना सुंदर है मेरा दिल करता है कि मैं चौबीस घंटे उसे देखता रहूँ। जब गुरु स्वरूप मेरी आँखों से दूर हो जाता है तो मैं पागलों की तरह फिरता हूँ। मैं बताया करता हूँ कि जब **मेरा प्यारा सतगुरु** मेरे घर आता था तो मैं आधा पागल हो जाता था। कबीर साहब कहते हैं:

जब तू आवे आँख में आँख झाँक मैं लूं।
ना मैं देखां और को ना तुझे देखन दूं।

हे प्यारेया! तू इतना प्यारा और खूबसूरत है कि तू मेरी आँखों में आ जाए तो मैं आँखें बंद कर लूं फिर ना मैं किसी की तरफ देखूं न तुझे किसी को देखने दूं। ऐसा आदमी किसी और की तरफ आँख भरकर नहीं देख सकता जिसे भी देखेगा गुरु समझकर ही देखेगा उसकी नज़र आत्मा पर ही होगी। जब स्वामी जी महाराज अंदर गए तो आपने कहा:

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी।

लोग परियों की प्रशंसा करते हैं जबकि परियाँ देखी नहीं। जिन्होंने अपने गुरु को अंदर जाकर देखा है वे कहते हैं कि **हमारे प्यारे सतगुरु** जैसा हमने कोई नहीं देखा क्योंकि उस स्वरूप का कोई रूप, रंग और भेख नहीं होता। हम स्थूल में बैठे हैं, वह यहाँ भी सुंदर है। जब स्थूल देश छोड़कर सूक्ष्म देश में जाते हैं तो वह वहाँ सूक्ष्म रूप धारण करता है। स्थूल दुनियां से सूक्ष्म दुनियां सुंदर और आकर्षित है। जब कारण में जाते हैं तो वह 'शब्द–रूप' है जो बयान से बाहर है। सन्त किसी–किसी पर ही इस स्वरूप की मौज बरताते हैं जो उसके काबिल होता है।

मैं कभी–कभी **अपने प्यारे सतगुरु** के बारे में बताया करता हूँ कि मैं जब आपसे बात करने लगा तो आपकी आँखें चमकी, रोम–रोम से नूर निकला जिसका तेज सहन नहीं किया जा रहा था। भौहें कमान की तरह थी; आँखे शेर की तरह थी जिन्होंने आपको आँखों से देखा वे भी उसे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इशारे से बताते हैं कि इससे सुंदर और कौन है? जिसने भी अंदर जाकर देखा है वह इस सच्चाई को बयान करने से रह नहीं सका। आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द है प्यार से सुनें:

नारद साध सो अंतर नाहीं। नारद साध सो अंतर नाहीं।
जो कोइ साध सों अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं।।

कबीर साहब हमें बहुत प्यार से समझाते हैं, ''परमात्मा ही रूप धारण करके हम इंसानों में इंसान बनकर आता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

साध रूप अपना तन धारया।

कबीर साहब कहते हैं कि आप नारद के सूत्र पढ़कर देखें! परमात्मा और उसके साध में कोई अंतर नहीं। साध आपकी निस्वार्थ सेवा करता है आपको चौबीस घंटे परमात्मा की बातें सुनाता है। साध सेवक से इसका कोई मुआवजा नहीं माँगता अगर माँगता है तो सिर्फ भजन–सिमरन ही माँगता है। साध की सच्ची भेंट भजन–सिमरन ही है। साध अपने सेवक से भजन–सिमरन की ही आशा रखता है।

हम साधु के पास जाकर कहते हैं कि हमारे गिट्टे–गोडे दुखते हैं कमर दुखती है ख्याल नहीं टिकता; क्रोध आता है। भजन नहीं करेंगे तो क्रोध ही आएगा क्योंकि खाली जगह देखकर हर कोई डेरा लगाता है। साधु और परमात्मा में कोई अंतर नहीं। क्या दोनों में अंतर समझने वाला तर जाएगा? दो घोड़ों पर चढ़कर कोई भी आदमी मंजिल पर नहीं पहुँच सकता। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

ऐधर गुरु का दवारा ओधर मजहबां दा अखाड़ा तू पैर टिका लै इक पासे।
दो बेड़ियां वाला डुब मरदा तू लग्न लगा लै इक पासे।

गुरु मिल गया हमारी खोज खत्म हो गई। 'नाम' मिल गया अब आप पक्के विश्वास के साथ उस बेड़े पर सवार हो जाएं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यह विचारने वाली बात है कि हम यह कहते हैं जो महात्मा पिछले वक्त में हुए हैं वे ठीक थे लेकिन जो महात्मा आज हैं ये ठीक नहीं। हम जिस परिवार में पैदा होते हैं हमारे माता–पिता किसी न किसी को तो मानते ही हैं; हमारा दिमाग भी उन बातों से भर जाता है। जब कोई मालिक का प्यारा मिलता है तब हम सोचते हैं कि वह सन्त ठीक था जबकि हमारे माता–पिता और दादा–पड़दादा ने उसे नहीं देखा होता। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पोथन में सुनी उनकी महिमा भेख बांध चित्त सबका भरमा।

पोथियों में महिमा सुनकर उनका चित्त भ्रम में है, तसल्ली फिर भी नहीं होती। आप देख लें! अगर आज बच्चा यह कहे कि पहले की माताएं ही अच्छी थी, मैं तो इसका दूध ही नहीं पीता; क्या उस बच्चे की परवरिश हो जाएगी? वह तड़फ कर ही मरेगा। हमारी भी यही हालत है जिस तरह वक्त के माता–पिता की जरूरत है उसी तरह वक्त के महात्मा की भी जरूरत है। सभी सन्त इज्ज़त के काबिल हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सबको करूँ प्रणाम हाथ जोड़कर ना समझूं अपने सतगुरु समसर।

सन्तों के दिल में सबके लिए इज्ज़त होती है। आप वक्त के गुरु से मिलेंगे तो आप उन मंडलों में जाकर उन सन्तों से मिलेंगे। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

सन्त मंडल का नाहीं विनाश।

जो सन्त मंडल में पहुँच जाते हैं उनका विनाश नहीं होता, वे 'शब्द' में मिल जाते हैं; आप वही रूप समझकर भक्ति करें। कबीर साहब के समय मूर्ति पूजा बहुत थी। कबीर साहब की बहुत विरोधता थी। मालिक के प्यारे हमें प्यार से समझाते हैं और अपना उपदेश देते हुए बेधड़क हो जाते हैं।

जागे साध तो मैं हूँ जागूँ, सोवै साध तो सोऊँ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब कहते हैं, ''यह मैं नहीं कह रहा यह मेरे बीच बैठकर परमात्मा कह रहा है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी कहा है:

ज्यों बुलावैं त्यों नानक दास बोले।

जब आप गुरु को प्रकट कर लेते हैं तो डोरी गुरु के हाथ में हो जाती है। वह जैसे बुलवाता है वैसे ही बोलते हैं। आप भजन में पढ़ते हैं:

अजायब बोल रहया तूं जिवें बुलौना ऐ।

हमारे प्यारे सतगुरु कृपाल ने महाराज सावन के आगे खड़े होकर यही कहा था, ''जो नाच नचवाओगे वही नाचा जाएगा। अच्छा तो यही था कि आप शरीर में ही रहते।'' कबीर साहब कहते हैं, ''परमात्मा कहता है साधु जागता है तो मैं भी जागता हूँ अगर साधु सो जाता है तो मैं भी उसके साथ ही सो जाता हूँ। साधु सोता और जागता हुआ उसका हो गया।''

जो कोइ मेरे साध दुखावे, जरा मूल से खोऊँ।।

साधु किसी को श्राप नहीं देता। गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया, उनके सिर में गर्म रेत डाला गया आपने किसी को बद्दुआ नहीं दी फिर भी आपने परमात्मा से यही कहा:

तेरा भाणा मीठा लागे।

जब क्राईस्ट को काँटों का ताज पहनाकर सूली पर चढ़ाने लगे तो क्राईस्ट ने परमात्मा के आगे यही प्रार्थना की, ''हे परमात्मा! तू इन्हें बख्श दे, इन लोगों को पता नहीं कि ये क्या कर रहे हैं?'' हम लोग सन्तों को कष्ट देते हैं फिर भी सन्त हमारे लिए परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि इन बेचारों को पता नहीं तू इन्हें बख्श दे।

आज तक इतिहास में ऐसा जिक्र नहीं कि किसी पूर्ण सन्त ने बद्दुआ दी हो। ब्रह्म तक पहुँचे हुए बद्दुआ और वर भी दे देते हैं लेकिन सच्चखंड

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पहुँचा हुआ साधु किसी को बद्दुआ नहीं देगा, वर जरूर दे देगा। मैं बाबा बिशनदास जी की कहानी सुनाया करता हूँ कि मैंने यह सब कुछ सच साबित होते हुए भी देखा है।

जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करौं मैं बासा।

जहाँ साधु मेरा यश गाता है चाहे वह समुद्र में है, पहाड़ की चोटी पर है या जंगल बियाबान में है, मैं सब कुछ छोड़कर वहाँ जाता हूँ। ऐसा नहीं कि सोने के मंदिर में या अच्छे पत्थर के मंदिर में परमात्मा आता है।

साध चलै आगे उठ धाऊँ, मोहिं साध की आसा।।

आप कहते हैं कि जब साध वहाँ से चला जाता है मैं उससे पहले ही वहाँ से आ जाता हूँ। भक्त अपने प्यारे की बड़ाई करते हैं तो परमात्मा भी अपनी महिमा सुनने के लिए आ जाता है, यह भी उसका गुण होता है। बड़ाई का भूखा कौन नहीं है? बच्चे की बड़ाई करें तो बच्चा खुश हो जाता है।

हमारे प्यारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अवतार हर युग के अंत में आता है। अवतार दुष्टों का नाश करने के लिए आता है लेकिन सन्त नित–अवतार होते हैं। सन्त दुष्टों का सुधार करने के लिए आते हैं, इन दोनों में बहुत अंतर होता है।''

बीबी लाजो महाराज सावन सिंह जी का खाना बनाती थी उसने हमें बताया कि एक बार महाराज सावन सिंह जी कांगड़े की पहाड़ियों की तरफ जा रहे थे। वहाँ आपको एक भगवे कपड़ो वाला साधु मिला। महाराज सावन सिंह जी उससे बहुत प्यार से गले लगकर मिले। बीबी लाजो ने महाराज जी से पूछा कि आप इससे ऐसे मिले जैसे पहले से वाकिफ हैं? महाराज जी ने कहा, ''हाँ! हम बहुत पहले से वाकिफ हैं। इसमें बहुत ताकत है अगर यह किसी के साथ आँख मिलाए तो उसे सीधा सच्चखंड ले जा सकता है लेकिन हमें हुक्म है कि जीवों को समझाकर सतसंग सुनाकर लाओ।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग के जरिए कितने जीव इस तरफ आ सकते हैं? ऐसे साधु कम ही किसी के साथ आँख मिलाते हैं, ये दुनियां में ही नहीं जाते; दुनियां से किनारा ही रखते हैं।

परमात्मा कहता है कि मैं साधु के जाने से पहले ही चला जाता हूँ। मुझे साध से यह आशा है कि यह मेरे साथ मेरी प्यारी आत्माओं को जोड़ेगा, मेरे भूले हुए बच्चों को घर लाऐगा। आप देखें! अगर आपका बच्चा घर से नाराज होकर चला जाए या अनजाने में घर छोड़ जाए आप किसी का सहारा लेते हैं कि उसे मनाकर लाओ, ढूंढकर लाओ। अखबारों में निकालते हैं कि तेरे मम्मी–डैडी बीमार है अगर वह खुद यह अखबार पढ़े तो घर वापिस आ जाए। जब दुनियावी माता–पिता ऐसा करते हैं, वह परमात्मा तो हमारे साथ हजारों माता–पिता जैसा प्यार रखता है।

हमारी आत्मा परमात्मा की बच्ची है इसलिए परमात्मा अपने प्यारे साधुओं को भेजता है कि तुम इन्हें समझाकर घर ले आओ। सन्त हमें समझाने के लिए ही दिन–रात सतसंग करते हैं कि तुम्हारा घर और है तुम्हारा पिता तुम्हें याद कर रहा है।

माया मेरी अर्ध-सरीरी, औ भक्तन की दासी।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी।।

माया भी मेरा ही अंग है। इसे हुक्म है अगर तुझे पवित्र होना है तो जाकर साधुओं की सेवा कर। माया सन्तों के दरबार में ठोकरें खाती है, वह अंगीकार नहीं करते। कई प्रेमी काफी पूँजी उठाकर लाते हैं मिन्नतें करते हैं कि इसे अंगीकार करें।

महाराज कृपाल हँसते हुए कहा करते थे, ''जब माया भगवान के दरबार में गई तो उसका माथा घिसा हुआ था सिर पर बाल नहीं थे। परमात्मा ने पूछा तेरी यह हालत? माया ने कहा कि मैं सन्तों के दरबार में

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नाक रगड़ती हूँ कि आप जहाँ चाहे वहाँ लगा देना किसी भी गरीब की मदद कर देना। दुनियादार मेरे पीछे फिरते हैं मैं उनके हाथ नहीं आती। दुनियादारों ने मेरे बाल खींच–खींचकर उखाड़ दिए हैं। मैंने सन्तों के दरबार में मत्था रगड़–रगड़कर अपना माथा घिसा लिया है।'' कबीर साहब कहते हैं:

साधु के ढाड़ी दरबार शरण तेरी मोको निस्तार।

माया साधु के दरबार में जाकर माथा टेकती है कि तू मुझे भी पवित्र कर दे। हम बाहर से ही माया को त्याग देते हैं लोगों से कहते हैं कि दान करें। दान करने का हक तो हर किसी को होता है। क्या सन्त को हुक्म नहीं कि वह भी दान करे? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु पीर सदाए मंगण जाए ताँके मूल न लग्गी पाए।
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाणे से।

गुरु पीर के लिए परमात्मा तभी दरवाजा खोलता है कि वह अपने दसों नाखूनों की मेहनत करे। उसमें से भी किसी गरीब की मदद करे, लंगर में डाले ऐसा नहीं कि कमाकर खुद ही डकार जाए।

हमारे प्यारे सतगुरु महाराज कृपाल बताया करते थे, ''महाराज सावन ने अपने आखिरी समय में भरी संगत में कहलवाया अगर मैंने किसी से लेना है तो मैंने वह छोड़ा। किसी ने अंजाने में मुझसे लेना हो तो वह खड़ा होकर बता सकता है। संगत मुझसे हिसाब ले सकती है। मैंने संगत के काम में कार का इस्तेमाल किया है या सब्जी खाई है।''

प्यारेयो! सन्त का जीवन एक नमूना होता है। गुरु नानकदेव जी ने खेती की। कबीर साहब ने ताणा बुना। रविदास जी ने जूतियाँ बनाई। महाराज सावन सिंह जी अपनी पेंशन में गुजारा करते रहे खेती करवाते रहे। मैं खुद दराती से आपके खेतों में कनक निकालता रहा हूँ गन्ने छीलता रहा हूँ। महाराज सावन खुद हमारे पास खेत में आया करते थे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसी तरह परमात्मा कृपाल अपनी पेंशन में गुजारा करते रहे। सन्त अपना खर्चा कम कर लेते हैं। बहुत से आदमी कहते हैं कि पेंशन से घर का गुजारा नहीं चलता। प्यारेयो! हमने खर्चे बढ़ाए हुए हैं।

आप सन्तों का बाथरूम देखें वहाँ मामूली सा बद्दल होगा और एक साबुन होगा। आप दुनियादारों के बाथरूम देखें? शुरू–शुरू में दिल्ली के प्रेमी मेरा बाथरूम देखते, वहाँ क्या होना था? मेरे कहने का भाव सन्तों ने अपना खर्च घटाया होता है। आप एक बार पाँच–सात सूट बनवा लें आपको दस साल जरूरत नहीं पड़ेगी।

हम तीर्थों पर कितनी–कितनी दूर जाते हैं। मक्का, अमरनाथ की गुफा, वैष्णों देवी का मंदिर, हुजूर साहब है। पंजाब के बहुत लोग पवित्र यात्रा करते हैं। मैंने खुद ये यात्राएं की हैं। जहाँ खोज हो वहाँ प्रेम से करना पड़ता है। कबीर साहब कहते हैं, ''आप साध की संगत कर लें साध के चरणों में माथा टेक लें आपको सब तीर्थों का फल मिल जाएगा।''

तीर्थ न्हात्यां एक फल साध मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल कहे कबीर विचार।

अंतरध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई।

जो सिमरन करके अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ गए हैं उन्होंने परमात्मा को पा लिया है। औरत, बच्चा, बूढा कोई भी परमात्मा को पा सकता है। जिसने भी ख्याल को अंदर लाकर अपने को 'शब्द' के साथ जोड़ लिया उसने परमात्मा को पा लिया इसमें किसी कौम, मजहब या मुल्क का लिहाज नहीं।

हमारे प्यारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''अगर जवानी में हमारा ख्याल इस तरफ आ जाए क्योंकि इस समय हमारा ख्याल कम फैला होता है शरीर में बल होता है हम कई घंटे लगातार अभ्यास कर सकते हैं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मैं जयपुर गया। वहाँ कुछ पंडितों ने मेरे पास आकर कहा कि आप औरत–मर्द दोनों को इकट्ठे ही दीक्षा देते हैं, औरत को तो वेद पढ़ने का भी अधिकार नहीं। मैं उन पंडितों की बात सुनकर कुछ गंभीर हुआ मैंने उनसे कहा, ''मैं आपकी इज्ज़त करता हूँ। औरत से पैदा हुआ तो वेद पढ़ सकता है लेकिन औरत नहीं पढ़ सकती। आप कोई ऐसा आदमी ले आएं जिसे किसी औरत ने पैदा न किया हो, वह वेद पढ़कर सुनाए तो कहेंगे कि औरत वेद नहीं पढ़ सकती।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सो क्यों मंदा आखिए जित जम्मे राजान।

सन्तों ने औरत को जगत जननी कहा है। राजा, महाराजा, सन्त भी इसी तरीके से संसार में आते हैं। सामाजिक लोगों ने यह कानून बनाए हुए हैं कि यह हकदार है, वह हकदार नहीं। कबीर साहब कहते हैं कि हिन्दू–मुसलमान, सिख–ईसाई, औरत–मर्द जो भी परमात्मा की भक्ति करे परमात्मा उसका है।

कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने जो कुछ बयान किया है वह अपनी तरफ से नहीं किया। मेरे अंदर वह परमात्मा बोलता है अगर आप परमात्मा के बन गए हैं तो वही आपके अंदर बोलेगा। इसलिए जो साधु की महिमा गाई है वह हरि भगवान ने खुद ही गाई है।'' पलटू साहब कहते हैं:

ढले पसीना सन्त ढले मेरा लहू है।

जो सन्त अभेद हो गया है वह अपने आप कुछ नहीं बोलता। जो कुछ उसका परमात्मा बुलवाता है वह वही बोलता है। वह यही कहता है कि प्यारेयो! मनुष्य जन्म बहुत उत्तम है बहुत कीमती है यह आपको भाग्य से मिला है, आपको बार–बार नहीं मिलेगा। भक्ति करके ही आप इससे फायदा उठा सकते हैं, आप इस वक्त को खराब मत करें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

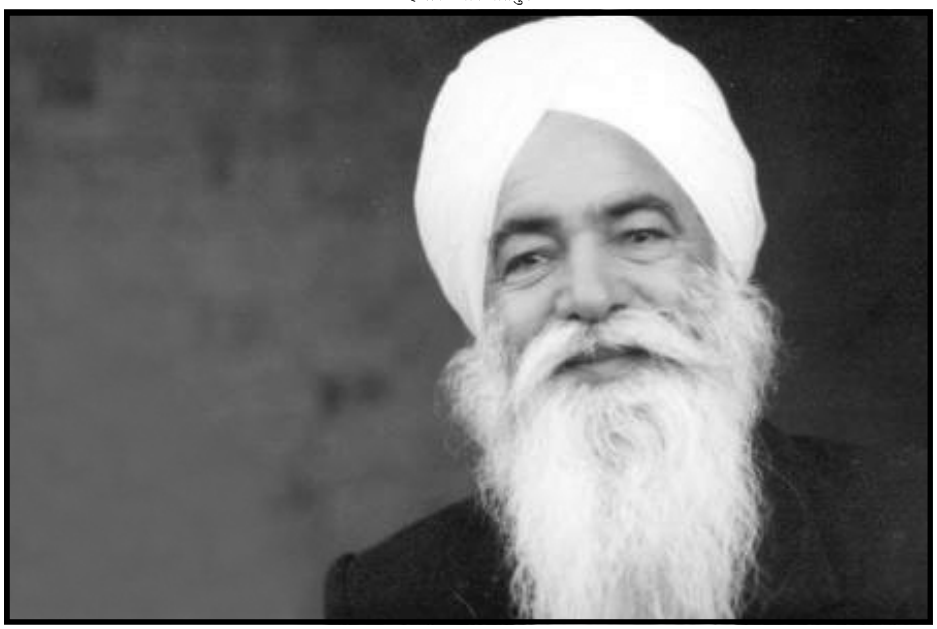

प्यारे बच्चों! मैं आपको **अपने प्यारे सतगुरु** महाराज कृपाल का वचन आमतौर पर याद दिलाया करता हूँ, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठ जाएं। आप तब तक तन को खुराक न दें जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे देते। तन की खुराक अन्न है अन्न नहीं खाएंगे तो चला नहीं जाएगा काम नहीं कर सकेंगे; आत्मा की खुराक 'शब्द–नाम' की कमाई है।'' हमारे अंदर आत्मिक बल नहीं इसलिए हम कहते हैं कि मन नहीं टिकता अगर अभ्यास करेंगे तो आत्मा के अंदर जोश आएगा, आत्मा बलवान होगी आत्मा के लिए भी खुराक जरूरी है।

भजन–अभ्यास को कभी बोझ न समझें। अपने घर में रोजाना प्यार से अभ्यास करें। समय का हिसाब रख लें कि हमें किस समय दुकान या दफ्तर जाना है; कब खाना खाना है या खेती करनी है। उसमें आप अभ्यास का समय भी रख लें। मैं यही आशा करता हूँ कि आपने जो कुछ सुना है उस पर अमल करेंगे और अपनी जिंदगी को सफल बनाएंगे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कपटस्नेही

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सूरज जोति उदोति करि चानणु करै अनेरु गवाए।
किरति विरति जग वरतमान सभनां बंधन मुकति कराए।

यह भाई गुरदास जी की बानी है। आप उल्लु का दृष्टांत देते हैं, उल्लु का भाव मनमुख है। सूरज सुबह प्रकाश देता है सभी जीव–जन्तु अपने कारोबार में लग जाते हैं, खुश होते हैं; सबके बंधन कट जाते हैं।

पसु पंखी मिरगावली भाखिआ भाउ अलाउ सुणाए।
बाँगाँ बुरगू सिंडीआं नाद बाद नीसाण वजाए।

पशु–पक्षी अपनी–अपनी बोली बोलते हैं; मृग अपने स्वर में मीठे राग अलापते हैं। काज़ी बाँगे देते हैं, योगी नाद बजाते हैं और बादशाहो के द्वारे पर नगाड़े बजते हैं।

घुघू सुझु न सुझई जाइ उजाड़ी झथि वलाए।
साधसंगति गुर सबदु सुणि भाउ भगति मनि भउ न बसाए।
मनमुख बिरथा जनमु गवाए, मनमुख बिरथा जनमु गवाए।।

आप कहते हैं कि सूरज के प्रकाश से पशु–पक्षी खुश होते हैं। वर्तमान संसार अपनी क्रिया में लग जाता है लेकिन उल्लु एक ऐसा पक्षी है कि सूरज निकलते ही उस पर उदासी छा जाती है जैसे उसके माँ–बाप मर गए हों क्योंकि सूरज के निकलने पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता; वह सारा दिन उजाड़ों में भटकता रहता है।

'मनमुख' अगर साध संगत में आ भी जाए तो उसका मन नहीं लगता वह भी उल्लू की तरह उदास रहता है, उसके मन में कपट होता है। साँप

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को चाहे कितना भी दूध पिला दें! गले से नीचे उतरते ही वह दूध विष बन जाता है। इसी तरह चाहे सन्त 'मनमुख' को कितना ही 'शब्द–नाम' का अमृत पिला दें लेकिन मनमुख गुरु पर, शब्द पर ऐतबार ही नहीं करता।

बाबा बिशनदास जी उल्लुओं के प्रति एक छोटी सी कहानी सुनाया करते थे एक बार उल्लुओं की सभा में सब नर–नारी मिलकर बैठे थे। उल्लुओं की आयु बहुत बड़ी बताई गई है। उस सभा में एक उल्लू हजार वर्ष की आयु का भी था। वह कहने लगा, ''भाईयो! मैं अब संसार छोड़ रहा हूँ अगर किसी को गुण ज्ञान की कोई बात पूछनी हो तो पूछ सकता है।'' उसके साथियों ने पूछा, ''जिस सूरज के बारे में दुनियां इतना शोर करती है, क्या कोई सूरज है?'' उसने उत्तर दिया, ''मेरे पड़दादा की उम्र दो हजार साल थी उसके मरने के समय मैंने उससे पूछा था क्या कोई सूरज है?'' तो उसने बताया था कि कोई सूरज है ही नहीं, दुनियां ऐसे ही वहम कर रही है इसी तरह मनमुख उल्लु की तरह है।

सूरज निकला हुआ है प्रकाश दे रहा है लेकिन पिछले कर्मों की वजह से उल्लु की आँखों का स्वभाव ऐसा बन चुका है कि सूरज की रोशनी से उसकी आँखों के आगे अंधेरा आ जाता है इसी तरह **कपटस्नेही** अगर साध–संगत में आ जाता है तो वह गुरु और नाम पर विश्वास नहीं करता।

चंद चकोर परीति है जगमग जोति उदोतु करंदा।
किरखि बिरखि हुइ सफलु फलि सीतल सांति अमिउ वरसंदा।

अब भाई गुरदास जी चकवा और चकवी की मिसाल देकर समझाते हैं, ''चकवे को चन्द्रमा से प्यार है। चन्द्रमा के प्रकाशमान होते ही वह उसकी तरफ टकटकी लगाकर बैठ जाता है। चन्द्रमा अपनी शीतल रिश्में पृथ्वी पर भेजता है जिससे फल, फूल और पौधों में रस पड़ता है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नारि भतारि पिआरु करि सिहजा भोग संजोगु बणंदा।
सभना राति मिलावड़ा चकवी चकवा मिलि विछुड़ंदा।

रात में जब चन्द्रमा यौवन पर होता है उस समय मियाँ–बीवी आपस में प्यार करते हैं लेकिन चकवा–चकवी रात को बिछुड़ जाते हैं।

साधसंगति गुर सबदु सुणि कपट सनेही न थेहु लहंदा।
मजलसि आवै लसणु खाइ गंधी वासु मचाए गंदा।
दूजा भाउ मंदी हूँ मंदा, दूजा भाउ मंदी हूँ मंदा।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''**कपटस्नेही** पत्थर की तरह होता है साधसंगत में आने पर भी उस पर सन्तों के वचन का कोई असर नहीं होता। जैसे कोई व्यक्ति लहसुन खाकर मजलिस में आकर बैठ जाए तो वह दुर्गन्ध ही फैलाता है। **कपटस्नेही** गुरु से दिखावे का प्यार करते हैं अगर संगत में आ भी जाएं तो एक–दूसरे को लड़वाते हैं। जो 'नाम' लेकर गुरु को छोड़ देते हैं; साधसंगत की निन्दा करते हैं या गुरु के निन्दक बन जाते हैं वे बुरे से भी बुरे हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''जो राम से, गुरु से, शब्द से बिछुड़ जाते हैं वे न दिन को न रात को कभी भी परमात्मा से नहीं मिल सकते जबकि चकवा–चकवी तो फिर भी दिन में मिलाप कर लेते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''शिष्य जितने अच्छे होंगे उनमें उतनी ही ज्यादा 'नाम' की खुशबू आएगी और उनके गुरु की बड़ाई होगी कि यह शिष्य पूरे गुरु की शिक्षा पर चलता है।''

खटु रस मिठ रस मेलि कै छतीह भोजन होनि रसोई।
जेवणिवार जिवालीऐ चारि वरन छिअ दरसन लोई।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''आप कड़छियों और जीभ की मिसाल लें कि रसोई में खट्टे–मीठे रसों को मिलाकर छत्तीस प्रकार के भोजन तैयार

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

किए जाते हैं। रसोईया चारों वर्णों और छह दर्शन के लोगों को खाना परोसता है। जीभ एक–एक खाने का स्वाद बताती है लेकिन कड़छियां उसके स्वाद से वंछित रह जाती हैं चाहे कड़छियां छत्तीस प्रकार के खानों में घूमती हैं।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

कड़छियां स्वाद न जानण फिरदियां सुन्नियां।

त्रिपति भुगति करि होइ जिसु जिहबा साउ सिआणै सोई।
कड़छी साउ न संभलै छतीह बिंजन विचि संजाई।

जीभ खाना चखकर उसका स्वाद बता देती है लेकिन कड़छियां स्वाद से महरूम रहती हैं। मनमुख कड़छी की तरह हैं वह सतसंग में आता है कमाई भी करता है लेकिन कड़छी की तरह सूना रह जाता है क्योंकि उसके दिल में कपट है; वह **कपटस्नेही** है। गुरुमुख जीभ की तरह गुरु के 'शब्द–नाम' का रस चखकर भरपूर हो जाते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''गुरुमुख की यह पहचान है कि वह गुरु के वचन को सत्य मानता है, सबसे प्यार करता है और किसी की आलोचना नहीं करता। मनमुख तकरार करता है उसे निन्दा में रस आता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरुमुख के माथे पर नहीं लिखा होता कि यह गुरमुख है और मनमुख के माथे पर नहीं लिखा होता कि यह मनमुख है। ये अपने कर्मों से पहचाने जाते हैं।''

रती रतक ना रलै रतना अंदरि हारि परोई।
साधसंगति गुरु सबदु सुणि गुर उपदेसु आवेसु न होई।
कपट सनेहि न दरगह ढोई, कपट सनेहि न दरगह ढोई।।

रत्ती और रत्तक का मेल नहीं हो सकता। देखने में दोनों एक जैसे लगते हैं लेकिन इनकी कीमत में बहुत फर्क होता है। रत्ती (हीरे–जवाहरात)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को हार में पिरोया जाता है इसी तरह **कपटस्नेही** चाहे साधसंगत में मिल भी जाए तो भी उनका दिल गुरु के उपदेश पर नहीं टिकता, वे गुरुमुख की रहनी नहीं रह सकते। ऐसे कपटस्नेहियों को परमात्मा अपनी दरगाह में दाखिल नहीं करता।

नदीआ नाले वाहड़े गंग संग मिलि गंग हुवंदे।
अठसठि तीरथ सेवदे देवी देवा सेव करंदे।

भाई गुरदास जी कहते हैं जिस तरह नदी नाले गंगा में मिलकर गंगा ही कहलाते हैं। इसी तरह मनमुख लोग तीर्थों पर भी जाते हैं, देवी–देवताओं को भी पूजते हैं वेदों–शास्त्रों को भी सुनते है।

लोक वेद गुण गिआन विचि पतित उधारण नाउ सुणंदे।
हसती नीरि न्हवालीअनि बाहरि निकलि छारु छणंदे।

कपटस्नेही वेदों–शास्त्रों को भी सुनते हैं और युक्ति से सन्तों से नाम भी प्राप्त कर लेते हैं लेकिन उन्हें सन्तों के उपदेश पर यकीन नहीं होता। **कपटस्नेही** की हालत हाथी जैसी है कि वह नहाने के बाद अपने ऊपर राख डाल लेता है जैसा पहले था फिर वैसा ही हो जाता है।

साधसंगति गुरसबदु सुणि गुरु उपदेसु न चिति धरंदे।
तुंमे अंम्रितु सिंजीऐ बीजै अंम्रितु फल न फलंदे।
कपट सनेह न सेह पुजंदे, कपट सनेह न सेह पुजंदे।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''**कपटस्नेही** संगत में आकर थोड़ा बहुत नाम भी जपता है लेकिन हाथी की तरह अपने ऊपर विषय–विकारों की राख डाल लेता है। कपटस्नेही सतसंग भी सुनता है लेकिन उसका प्यार कपट का है। उसकी हालत तुम्बे जैसी है, तुम्बे को अमृत से भी सींचा जाए तो भी उसका फल कड़वा ही होता है।'' हज़रत बाहु कहते हैं:

तुम्बे तरबूज कदे न होन्दे बाहू, चाहे तोड़े तोड़ मक्के ले जाइऐ हू।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यह उनके बस की बात नहीं उनके पिछले कर्म ही मंदे हैं, लिखे हुए कर्म मिटते नहीं। उन्होंने पिछले जन्मों में बुरे कर्म किए जिनका प्रभाव आत्मा पर पड़ता है और आत्मा मैली हो जाती है। परमात्मा उन बुरे कर्मों का वैसा ही फल दे देता है जो भुगतना पड़ता है। गुरु साहब कहते हैं:

लेख न मिटया हे सखी जो लिखया करतार।

खारे कुएं में चाहे कितना भी गुड़ डाल दें उसका पानी कभी मीठा नहीं होता। बहरे व्यक्ति को चाहे कितने भी वेद–शास्त्र सुना दें वह नहीं सुनता। अंधे के पास चाहे पचास दीपक जला दें उसे दिखाई नहीं देता। इसी तरह मैले हृदय वालों पर कोई असर नहीं होता जिस तरह मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता उसी तरह मैले मन वाले कभी भी भक्ति में कामयाब नहीं होते।

राजै दे सउ राणीआ सेजै आवै वारो वारी।
सभे ही पटराणीआ राजे इक दू इक पिआरी।

अब भाई गुरदास जी एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि एक राजा की बहुत सी रानियाँ हैं, राजा को सब रानियाँ प्यारी हैं।

सभना राजा रावणा सुंदरि मंदरि सेज सवारी।
संतति सभना राणीआँ इक अधका संढि विचारी।

राजा ने सभी रानियों को अच्छे–अच्छे महलों में अच्छा फर्नीचर लगवाकर दिया है लेकिन उनमें से एक–आध रानी बाँझ भी होती है जिसकी कोई औलाद नहीं।

दोसु न राजे राणीऐ पूरब लिखतु न मिटै लिखारी।

आप कहते हैं, ''इसमें राजा–रानी का दोष नहीं, पिछले कर्मों का लेख नहीं मिट रहा क्योंकि उसके भाग्य में बच्चा नहीं लिखा।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

साधसंगति गुर सबदु सुणि गुरु उपदेसु न मनि उरधारी।
करम हीणु दुरमति हितकारी, करम हीणु दुरमति हितकारी।।

कपटस्नेही संगत में तो आता है लेकिन न गुरु के वचनों को दिल में बसाता है और न ही कमाई करता है। पहले जो खोटे कर्म करके आया है, उस लिखे हुए को कैसे मिटा सकता है? उसकी खोटी बुद्धि उसका पीछा नहीं छोड़ती। वह बेचारा किसके कर्म लाए?

भाई गुरदास जी ने राजा रानी की मिसाल देकर हमें समझाया कि सच्चाई क्या है? वह प्रभु एक राजा है और हम सब उसकी रानियाँ है। परमात्मा सबको एक जैसा प्यार करता है लेकिन जिनके पिछले कर्म बुरे होते हैं उनके दिल में 'शब्द–नाम' नहीं टिकता। उन्हें सन्तों की शिक्षा अच्छी नहीं लगती। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ठाकुर एक सवाई नार।

वह ठाकुर, परमात्मा एक है, हम सब आत्माएं उसकी नारियाँ हैं। वह सबसे एक जैसा प्यार करता है। उस बाँझ नारी की तरह कोई ऐसा भी होता है जो परमात्मा की मौज, शब्द और गुरु को नहीं मानता।

प्यारेयो! भाई गुरदास जी किसी की निन्दा नहीं कर रहे और न ही हमें निन्दा करने का उपदेश दे रहे हैं। कुदरत ने हर वस्तु में कोई न कोई गुण और अवगुण रखा है। गुरमुख गुण के ग्राहक हैं। जिन महात्माओं ने अपने जीवन में परमात्मा को पा लिया होता है, वे परमात्मा से मिलकर परमात्मा ही हो चुके होते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि सतसंग के एक–एक लफ़्ज को ध्यान से सुनें। जो कमियाँ हैं उन्हें एक–एक करके छोड़ दें। हमें अपने सतगुरुओं के कहे मुताबिक अपना जीवन सच्चा–सुच्चा और ऊँचा बनाना चाहिए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

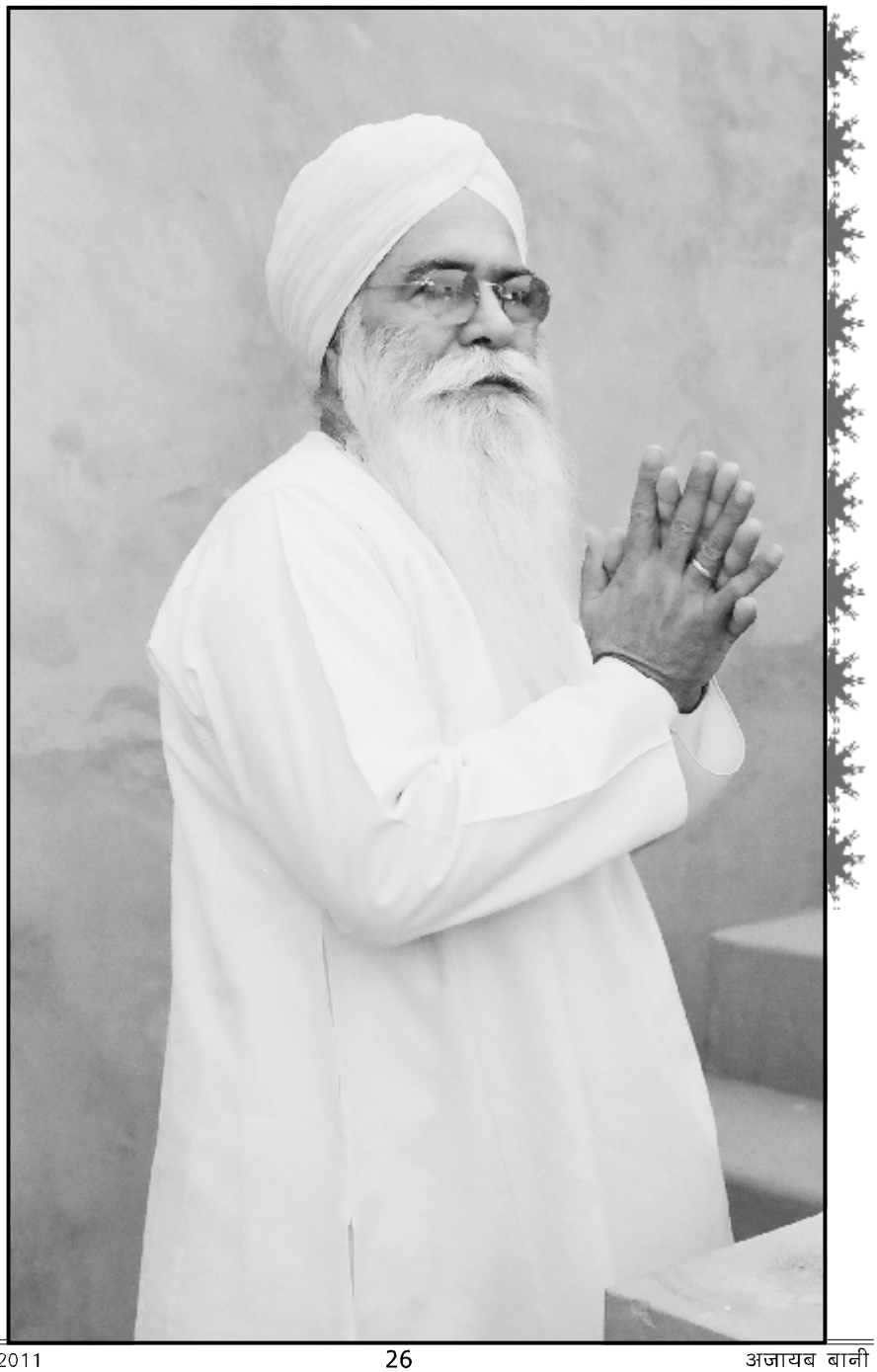

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

दया का सागर

आस्ट्रेलिया

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम पर अपरम्पार दया की, हमें अपनी भक्ति दी और भक्ति करने का मौका भी दिया। जब हम अपने आपको दुनियावी बातों से दूर करते हैं और गुरु के कहे अनुसार अपना ध्यान दोनों आँखों के पीछे लेकर आते हैं तब हम गुरु की दया को जान पाते हैं कि गुरु ने हमारे लिए क्या किया है?

जब हम दुनियावी चीजों से ऊपर उठते हैं और अपने आपको उस आवाज़ के साथ जोड़ते हैं जो परमपिता परमात्मा ने हमारे अंदर पैदा की है तभी हम समझ सकते हैं कि हम भूले हुए थे। हमारा प्यारा गुरु इस दुनियां में हमारे साथ आकर रहा और उसने हमें हमारे असली घर के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि हम पागलों की तरह इस दुनियां में कष्ट उठा रहे हैं।

गुरु **दया का सागर** है, हमारे ऊपर बहुत दया करता है। वह हमें हमारे असली घर वापिस ले जाता है। जब हम अंदर जाते हैं तभी हम गुरु के बड़प्पन और दया को समझ सकते हैं। हम कहते हैं कि हम गुरु के पास जाते हैं हमने उनसे 'नामदान' भी लिया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब आप दुनियावी चीज़ों को छोड़कर अंदर जाते हैं तभी समझ सकते हैं कि कौन आपको सतसंग में लेकर आता है और किसने आपको नामदान के लिए चुना है?''

जब हम अंदर जाते हैं हमें सच्चाई का पता चलता है कि वह गुरु था जिसने हमें चुना वही हमें सतसंग में लेकर आता है। उसने अपने आप हमें

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

'नामदान' दिया। गुरु दुनियावी तौर पर हमारे मार्गदर्शक का काम करता है, वह हमें बताता है कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? सच तो यह है कि परमपिता परमात्मा और हमारे गुरु में कोई फर्क नहीं है। यह एक ही शक्ति के दो नाम हैं लेकिन जब तक हम अंदर नहीं जाते तब तक इस बात को समझ नहीं पाते।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब तक परमपिता परमात्मा अंदर से आत्मा को प्रेरित नहीं करता तब तक कोई भी आत्मा 'नामदान' लेने और गुरु के पास जाने की बात सोच भी नहीं सकती। जब तक परमपिता परमात्मा आत्मा पर अपनी दया न करे और उसे पूर्ण गुरु के सम्पर्क में आने के लिए प्रेरित न करे तब तक कोई आत्मा अपने असली घर नहीं पहुँच सकती।''

बच्चा माँ की गोद के सुख को जानता है। माँ बच्चे की सारी जरूरतें पूरी करती है। इसी तरह अगर हमारी भूली हुई आत्मा भी यह समझ जाए कि असली सुख गुरु की गोद में है तो हम आराम से अपनी आत्मा को गुरु की गोद में समर्पित कर सकेगें लेकिन हमारी आत्मा यह सब नहीं समझती।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे परमात्मा! अगर यह हमारे हाथ में होता तो हम तुझसे बिछुड़कर रोते क्यों फिरते? हमें पता नहीं कि हम कितने जन्मों से तुझसे बिछुड़कर दुखी हो रहे हैं।''

महाराज कृपाल सिहं जी अक्सर कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी बीज नाश नहीं होता। ऐसा नहीं कि जिन्हें 'नामदान' मिल गया है वे सभी प्रेमी बाहर भटक रहे हैं कोई अंदर नहीं गया। संगत में ऐसे बहुत से प्रेमी हैं जो अंदर जाते हैं बहुत भजन–अभ्यास करते हैं उन्हें देखकर बहुत खुशी होती है। ऐसे प्रेमी जिन्हें अंदर गुरु की थोड़ी सी झलक मिली है अगर किसी तरह उन पर विछोड़े का समय आता है तो उनसे पूछो कि उन्हें कैसा लगता है उनकी क्या हालत होती है?''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वे आत्माएं पवित्र और भाग्यशाली होती हैं जो गुरु के शारीरिक रूप में रहते हुए ही अपने अंदर 'शब्द' को प्रकट कर लेती हैं। मैं अपने प्यारे गुरु के यश और शान के बारे में क्या कहूँ? आप बुढ़ापे में अपनी सेहत की परवाह किए बिना बहुत दूर–दूर अपनी आत्माओं की खोज में गए और उन आत्माओं को 'नाम' का अमृत पिलाया।

मैं यहाँ आपको कहानियाँ सुनाने के लिए नहीं आया हूँ। यह याद करवाने के लिए आया हूँ कि कृपाल क्या था और मुझे उससे क्या मिला? मैं यहाँ आपके साथ वह प्यार बाटँने आया हूँ जो मुझे उस प्रेम के सागर से मिला। मैं आपको यहाँ यह बताने के लिए आया हूँ कि **दया का सागर** प्यारा गुरु कृपाल कितना विशाल है।

मुझे बचपन से जब भी मौका मिला मैंने अपना समय परमपिता परमात्मा की खोज और याद में बिताया। मैं हमेशा सोचता! वे कैसी आत्माएँ थी जिन्हें पूर्ण गुरु से मिलने का मौका मिला और उन्होंने वही किया जो गुरु ने उन्हें करने के लिए कहा।

मैंने अपने जीवन में जिस तरीके से भक्ति की आपको यही बताने आया हूँ और आपसे वही भक्ति करवाने आया हूँ। मैं आपको यहाँ होटल में ले जाने के लिए या बाहर सैर कराने के लिए नहीं आया हूँ। मैं आपको अपने प्यारे गुरु कृपाल के घर ले जाने के लिए आया हूँ। मुझे जो प्यार उनसे मिला, वह आपसे बाटँने आया हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आप सब याद रखेंगे कि हम यहाँ क्यों आए हैं और हमारा यहाँ आने का क्या मकसद है? आप हमेशा उस मकसद के लिए अपना समय देंगे।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने भक्ति की है वही आपसे भक्ति करवा सकता है। यह करने की बात है कहने की नहीं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आज तक किसी ने बातों से परमात्मा को नहीं पाया। हम जब तक अभ्यास न कर ले तब तक अंदर नहीं जा सकते हमें शान्ति नहीं मिल सकती।''

अगर कोई आर्मी जनरल अपनी बहादुरी का अहंकार करे और कहे कि मैं यह लड़ाई तभी जीत सकता हूँ जब सामने फौज न हो! आप अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यह उसकी कैसी बहादुरी है? जब वह जंग के मैदान में लड़ने के लिए निकला है तो उसे सामने वाली फौज का सामना करना ही होगा।

इसी तरह हम इस जंग के मैदान में उतरे हैं। जब हम इस मैदान में आते हैं तो काल की सभी शक्तियां हमारे सामने आती है। असल में काल की ये शक्तियां परमात्मा ने खुद ही बनाई हैं। उसने हमें इस लड़ाई के लिए चुना है। उसने हमें 'नामदान' दिया है वह हमारा इम्तिहान लेना चाहता है कि हम कितने बहादुर हैं?

हमें उस जनरल की तरह नहीं होना चाहिए जो कहता है कि सामने कोई फौज न हो। हमें काल की शाक्तियों की फौज का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हम इस जंग में अकेले नहीं हैं। गुरु ने हमें 'शब्द–नाम' का हथियार दिया है, वह हमेशा हमारे पीछे खड़ा है। हमें जो भी चाहिए वह देने के लिए तैयार है। जब जंग होती है तो राजा हमेशा सेनापति के पीछे खड़ा होता है। उसे जो भी चाहिए वह सब मिलता है। इसी तरह जब हम इस जंग के मैदान में अपने मन से, काल की शक्तियों से लड़ते है तब हमारा गुरु हमेशा हमारे पीछे खड़ा होता है और हमें जो चीज़ चाहिए हमारे बिना कहे हमें वे सब चीज़े देता है।

हमें सदा याद रखना चाहिए कि जो जंग के मैदान में जाते हैं, उन्हें केवल मरना या मारने का ही पता होता है। जो जंग के मैदान में जाते हैं वे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दया का सागर

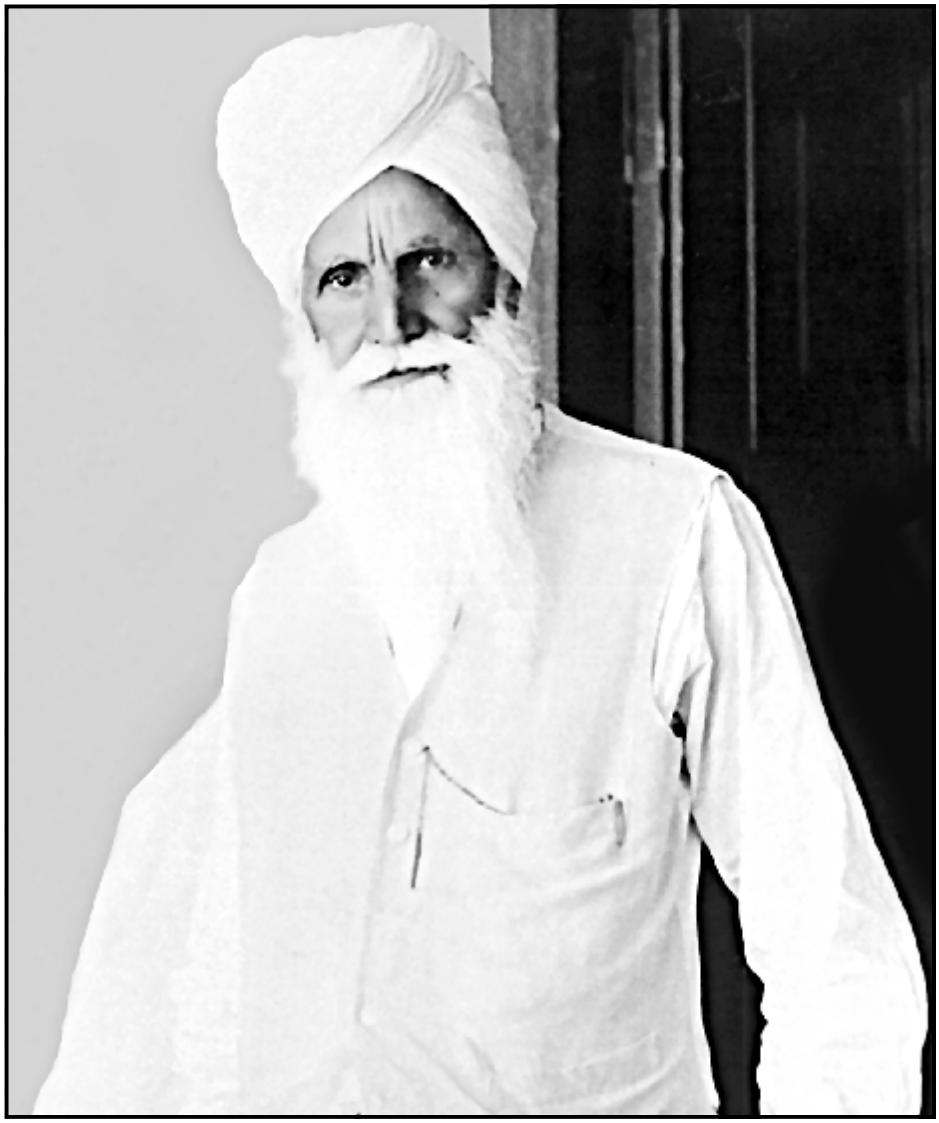

डरपोक नहीं हो सकते। हमें अपने गुरु से यह नहीं कहना चाहिए कि मैनें शराब पी ली, व्याभिचार किया या मैंने यह गलत काम किया है। अगर आप अपने आपको काल की शाक्तियों की लहरों में बहने देंगें तो ये ताकतें आपको नीचे की ओर ले जाएँगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप अपना ध्यान गुरु की ओर रखते हैं तो गुरु आपकी आत्मा को ऊपर ले जाऐगा अगर फिर भी आप दुनियावी कामों, सुखों, दुखों और व्याभिचारों में फसें हैं तो आप नीचे की ओर जा रहे हैं। जब हमने गुरु के चरणों की शरण ले ली है तो हमने काल की शक्तियों में नहीं बहना, हमेशा उनके साथ लड़ना है।

सदा याद रखें कि गुरु हमारे साथ है और सदैव हमारी मदद कर रहा है अगर हम दृढ़ विश्वास रखें तो निश्चित तौर पर यह जंग जीत जांएगे। इस जंग में जीत हासिल करने के लिए हमारे दिल में गुरु के लिए प्यार और विश्वास होना चाहिए। अगर हमारे पास ये सब चीज़े नहीं हैं तो हम इस जंग को नहीं जीत सकते।

महाराज सावन सिहं जी कहा करते थे, ''शिष्य की भी कुछ ड्यूटी होती है। गुरु हमेशा अपनी ड्यूटी निभाने के लिए तैयार रहता है। दो लोग ही किसी कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं इसी तरह अगर शिष्य अपनी ड्यूटी निभा रहा है तो कार्य हो जाएगा क्योंकि गुरु अपने हिस्से का काम हमेशा करता है लेकिन कभी–कभी शिष्य अपने हिस्से की ड्यूटी निभाने में आलसी हो जाता है।''

महाराज सावन सिंह जी यह भी कहा करते थे कि कुछ लोग यह सोचते हैं! गुरु हमें अपने आप ही मुक्ति दिलवा देगा। आप कहते:

लद्द वी दे, लद्देन्दा वी दे, लद्दनवाला वी घरों दे।

यह इस तरह है जैसे कोई आदमी न केवल सामान माँगता है, सामान उठाने वाली गाड़ी भी माँगता है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए यह हमारे मन की कमज़ोरी है। हमारा मन हमें अपने हिस्से की ड्यूटी नहीं करने देता।

जो विद्यार्थी स्कूल जाता है अपना पाठ याद करता है और टीचर के कहे अनुसार सब कुछ करता है वही अपने टीचर को खुश कर सकता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगर वह अपने आपको बुरी आदतों में फँसा लेता है, स्कूल नहीं जाता, पाठ याद नहीं करता तो वह अपने टीचर को कैसे खुश कर सकता है?

हमने जिस लग्न और प्यार से गुरु से 'नाम' लिया है हमें वह प्यार हमेशा बनाए रखना चाहिए। प्यार और लग्न के कारण ही हमारे हृदय में 'नामदान' लेने की प्रेरणा पैदा होती है। जैसे पहले हमारे अंदर लग्न थी नामदान मिलने के बाद हमारा मन हमारे और गुरु के बीच आ जाता है वह हर तरह की रूकावटें खड़ी कर देता है।

यह मन कभी–कभी प्यारा दोस्त बनकर आता है और हमें गुरु की राह पर चलने से रोकता है अगर हम उसकी बातों में नहीं आते तो मन हमारा दुश्मन बन जाता है। यह कभी–कभी हमें डराता है हर तरह की मुसीबतें खड़ी कर देता है और किसी तरह हमें गुरु से दूर ले जाता है। लेकिन हमनें एक फौजी की तरह इन काल की शक्तियों का सामना करना है अगर आप इस राह में सफल होना चाहते हैं तो आपको हमेशा प्रेम, प्यार और लग्न बनाए रखनी चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर प्रेमी प्रेम और लग्न को बरकरार रखे उसकी मुक्ति तो हो ही जाती है; वह लाखों आत्माओं को मुक्ति दिला सकता है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा है, ''गुरुमुख, 'नाम' की एक छोटी सी चिंगारी से लाखों आत्माओं को मुक्ति दिला सकता है।'' हममें जो प्यार और विश्वास नामदान के समय था उसे बनाए रखना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि आप अपने यहाँ आने के मकसद को याद रखेंगे, वह काम करेंगे जिसके लिए आप यहाँ आए हैं। यह छोटा सा कार्यक्रम आपके काम आएगा। हम जो भी श्वास, पल गुरु की भक्ति में बिताते हैं उस हर एक श्वास, पल का हिसाब रखा जाता है। वह **दया का सागर** सदा दया ही करता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से इस साल भी दिल्ली में 20,21 व 22 मई 2011 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नज़दीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा - 9810212138 : सोनू सरदाना - 9810794597 : सुरेश चोपड़ा - 9818201999

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com